वेथसेवा

प्रमोद कुमार सिंह

कई वर्षो के बाद मै विस्मार्क टुर्म पर चढा था।ये टुर्म समुद्री तल से तकरीबन आठ सौ मीटर की ऊँचाई पर है।नीचे से इस टुर्म तक कई पथरीली पगडंडियॉ जाती हैं।ये टुर्म हार्ल्स मे दूसरे अंचलों से आये लोगों के लिए एक बहुत ही बड़ा आकर्षण है।टुर्म की छत कमर की ऊँचाई तक एक मोटी सी दीवार से घिरी हुई है,जिस पर अनगिनत लोहे की फाईलें बनी हुई हैं।ये फाईले आसपास के बसे उन गॉवों को इंगित करती हैं,जो इस टुर्म की छत से नज़र आते हैं।दूर दराज तक पर्वतीय श्रृंखलायें बलखाती फैली हुई हैं,जो ओक और वल्क के पेंड़ों से आच्छादित हैं।मुझे यहॉ से कुछ पहाड़ी मैदान भी नज़र आ रहे थे।चतुर्दिश दृश्यावलियॉ फैली हुई थीं।जब तब मुझे बादलों की टुकड़ियॉ आके नम कर जाती थीं।इन्हे मै छू भी सकता था।जब तब मै गॉवों के नाम भी पढ लेता था।तभी मेरी नज़र वेर्टोल्डफेल्डे पर पड़ी।सहसा विश्वास नही हुआ कि इतनी दूर बसा ये गॉव इस टुर्म से देखा जा सकता है।कुछ घरों के खपरैल वाकई मे नज़र आ रहे थे।एक याद जो लगभग धूमिल पड़ चुकी थी,अनायास सुगबुगाई।मेरे दिमाग मे जो पहला नाम गूॅजा,वो वेथसेवा का था।अचानक मुझे ऐसा लगा कि इस गॉव का आहोर्न अपने इर्द गिर्द बने गोल लाल चबूतरे के संग उड़ता धीमे धीमे मेरे समीप आता चला जा रहा है।इस चबूतरे पर जब तब आ कर वेथसेवा भी बैठ जाया करती थी।

मुझे वेर्टोल्डफेल्डे मे आये तीन दिन हो चले थे।हम फार्म से वापस घर आ चुके थे।सात बजने वाले थे।हल्का सा धूँधलका फैला हुआ था।न जाने मै क्या लेने वाल्डट्राउट के कीचन मे गया था!कि देखा ःएक नितान्त निर्जन रास्ते पर धीरे धीरे पग रखती एक साया बढी जा रही है।जब ये साया एक लैम्प पोस्ट के समीप आई,तब मैने देखा कि एक ऊँचे कद की बहुत ही खूबसूरत लड़की आहोर्न क्नाईपे की ओर बढी चली जा रही है।क्नाईपे खुल चुका था।अन्दर का कुछ प्रकाश सामने बने चबूतरे पर भी पड़ रहा था।बार पर न जाने कितने जन बैठे थे,पर उनके सिगरेटों के धूँएॅ से वहॉ एक कोहरा सा फैला हुआ था।वो लड़की चुपचाप आ कर इस चबूतरे पर बैठ गई।उसने अपने दोनो हॉथों को अपने पैरों के बीच दबा रखा था।उसने एक लम्बी सी फ्राक पहन रखी थी।उसने अपने एक पॉव पर अपना दूसरा चढा रखा था।अपने बाल उसने पीछे की ओर समेट रखा था।न जाने वो इस चबूतरे पर बैठी किसका इन्तजार कर रही थी!कुछ देर तक मै खिड़की पर ही खड़ा रहा,फिर अपने सोने वाले कमरे मे आ गया।

वेर्टोल्डफेल्डे के लोग धीरे धीरे ये जान गए थे कि मै वाल्डट्राउट का मेहमान हूॅ,फिर भी मुझे वहॉ सावधानी से रहना होता था।आस पड़ोस के कुछ गॉवों में नेओनात्सीज कुछ ज्यादे ही सक्रिय थे।एक तरह से मै वाल्डट्राउट की आड़ और सुरक्षा मे रह रहा था।

मै कई दफे कीचन की खिड़की से झॉक आया।वो लड़की पूर्ववत एक बूत की तरह बैठी हुई थी।एक बार मेरा मन तो किया कि वाल्डट्राउट से उसके बारे मे कुछ पूछूँ।फिर कुछ सोच कर टाल दिया।

अभीं मेरी ऑख लगी ही थी कि सुबह तड़के वाल्डट्राउट आ कर मुझे जगा गई और बगल रखी तिपाई पर एक कप चाय रख गई।सुबह के चार बजने को आये थे।मैने आनन फानन अपने कपड़े बदले,लौन्गबूट मे अपने पैर घूसेड़े,एक भींगा तौलिया अपने चेहरे पर फिराया और वाल्डट्राउट के संग उसके स्टॉल चल पड़ा।उसका स्टॉल उसके घर से ज्यादे दूर नही था।इस स्टॉल मे दूध देने वाली तीन गायें थी,जिनके दूध तीन बार निकाले जाते थे।प्रतिदिन वो सौ लीटर से भी ज्यादे दूध देती थीं।उनका दूध एस्सेट कम्पनी वाले ले जाते थे और हमारे लिए साफ खाली बैरल्स छोड़ जाते थे।इस स्टॉल मे उन्नीस बछड़े भी थे।काम ही काम था।स्टॉल की सफाई,मवेशियों का दाना पानी सब कुछ निपटाने मे हमे नौ बज जाते थे,फिर हम घर वापस आते थे।वाल्डट्राउट घर के दूसरे कामों मे लग जाती थी और मै नहाने वाले कमरे मे जा घूसता था।अब एक बजे तक मुझे फुर्सत ही फुर्सत होती थी।गर्म खाने के नाम पर वाल्डट्राउट सिर्फ एक सूप बनाती थी।बाकी खाने ठंढे होते थे।नाना प्रकार के सौसेज,पनीर,खुद की प्रिजर्व की गई मछलियॉ,सब्जियॉ,दो तीन तरह के ब्रेड,खुद की बनाई शर्वतें और न जाने किन किन सामानों से खाने की मेज भरी सजी पड़ी रहती थी।मै अपने प्लेट मे ब्रेड की दो स्लाईसें सजा कर ड्राइमरूम मे आया।वाल्डट्राउट सोफे के एक कोने मे बैठी ऊन की जूरावें बूने जा रही थी और साथ साथ कुछ खाये भी जा रही थी।टेलीविजन भी साथ साथ चल रहा था।उसने पहले अपनी नज़र मेरे प्लेट पर डाली,फिर झिड़कते हुए बोलीःतुम खाना बहुत कम खाते हो।भूखे पेट न जाने कैसे तुम इतने सारे काम कर लेते हो!

ःतुम मेरे खाने की फिक्र न किया करो।मुझे जब भी भूख लगती है,कुछ न कुछ खा लेता हूॅ।ये सब कुछ लगभग टालते हुए मैने उससे पिछली शाम का जिक्र किया।सुनते ही उसने एक नाम लियाःवेथसेवा!

ःकौन है ये!इसी गॉव की है!

ःहॉ!श्वैन्या की बेटी है।

ःये श्वैन्या कौन है!

ःमेरी तरह विधवा है।उसे दो बेटियॉ है।बड़ी का विवाह हो चुका है।वो अपने पति के साथ सेले मे रहती है।वेथसेवा साथ ही रहती है,पर वो जन्म से अन्धी है।

ये मेरे लिए किसी आघात से कम न था।यकायक मेरा मन उदासियों मे जा डूबा।श्वैन्या पर भी मुझे बड़ी दया आई।ग्यारह वर्ष पहले उसके पति की मौत हुईथी।बेटियॉ तो छोटी थीं ही,पूरा फार्म भी मार्गेज पर चढा हुआ था।उसके पति ने कर्जे पर कर्जा ले रखा था।दो ट्रेनिज की मदद से वो अपना फार्म चला रही थी।वो इस क्नाईपे की भी मालकिन थी।जब तब वेथसेवा उसे लिवाने आ जाती थी।

मै न जाने क्यों वेथसेवा से एक बार मिलना चाहता था!उसे नजदीक से देखना चाहता था।नाश्ता करने के बाद मै यूँ ही बाहर घूमने निकल पड़ा।सबसे पहले मै आहोर्न क्नाईपे आया।इसके सामने का चबूतरा कम उम्र के लड़के और लड़कियों से भरा पड़ा था।दसों सायकलें इस चबूतरे से टिकी लुढकी पड़ी थी।यहॉ वहॉ इनके स्कूल के थैले पड़े हुए थे।क्नाईपे बन्द था।वेर्टोल्डफेल्डे मे कुल सतरह घर रहे होंगे,जो एक एल शेप के पक्के रास्ते के सिर्फ एक तरफ बने हुए थे।इस क्नाईपे के अलावे इस गॉव मे और कुछ भी नही था।इस गॉव से तीन किलोमीटर दूर एक हेर्सवेर्ग नाम का कस्बा था।वहॉ सब कुछ था।पोस्ट से लेकर पुलिस तक,स्कूल से लेकर अस्पताल तक।जरूरत की हर चीजें वहॉ खरीदी जा सकती थीं।वेर्टोल्डफेल्डे को घेरे पहाड़ी खेत दूर दूर तक फैले हुए थे।इन खेतो मे गेहूॅ,जौ,मक्के,आलू और सरसों की फसलें लहलहा रही थीं।इन खेतों मे न तो मुझे कोई किसान दिख रहा था और न कोई ट्रैक्टर ही।एकाध घरों के अहाते मे मुझे कुछ लोग बागवानी भी करते दिखे,पर वेथसेवा मुझे कहीं भी नही दिखी।मै वापस घर आ गया।

शाम के सात बजे के बाद मेरे पास समय ही समय होता था।मनोरंजन के नाम पर वाल्डट्राउट के पास एक रेडिओ,एक टेलीविज़न और फिर ढेर सारी किताबें थी।मेरा मन उचट चला था।मै अपने आप को बेहद उदास महसूस कर रहा था।न जाने कैसे वाल्डट्राउट ये भॉप ली।सोने जाने से पहले कहने लगीःयहॉ का जीवन इतना आसान नही है,जितना तुमने समझ रखा था।फिर तुम इसके अभ्यस्त भी तो नही हो।कल ही मै आन्द्रियास को फोन करके तुम्हे लिवा जाने को कहूँगी।मै सकपका गयाःतुम ऐसा कतई न करना।मेरी छुट्टियॉ गर्क न करो।तीन सप्ताह की तो बात है।मुझे अपने संग रख नही सकती हो!मै बोझ बन गया हूँ तुम पर!

वाल्डट्राउट हल्के से मेरा कन्धा सहला कर अपने सोने के कमरे मे चली गई।मै ड्राईन्गरूम मे बैठा गई रात तक बस टेलीविज़न के चैनल्स बदलता रहा।जब तब उठ कर मै रसोई की खिड़की पर जाके खड़ा हो जाता था।क्नाईपे तो शाम के पॉच बजे ही खुल चुका था,पर वेथसेवा का दूर दराज तक कोई अता पता नही था।

मेरी अधीरता अपनी सारी सीमायें भूले बैठी थीं।मुझे जब भी समय मिलता था,पूरे गॉव का चक्कर मार आया करता था।कुल सतरह ही तो घर थे।आगे पीछे सब झॉक आता था।वेथसेवा न जाने कहॉ गायब हो गई थी!किसी से उसके बारे मे पूछने से कतराता था।मेरे मन मे एक चोर समा चुका था।

वेथसेवा से मेरी मुलाकात कुछ दिनो के बाद हुई।मै वाल्डट्राउट के संग स्टाईन किर्से गया हुआ था,जहॉ रात के दस बजे लकड़ियों के एक ढेर मे आग दी जाने वाली थी।इस उत्सव को यहॉ इस्टर फॉयर कहते हैं।मध्यम दशकों मे ऐसी आगों मे यूरोप की डाईनों का अग्नि दाह किया जाता था।आसपास के गॉवों के लड़के लड़कियॉ न जाने कितने दिनों से लकड़ियॉ इकट्ठी किये जा रहे थे।इन लकड़ियों मे समय से पहले कोई आग न दे दे,वो अपनी टेन्टे लगा कर रात मे वहॉ पहरा भी देते थे और छक कर दारू और सिगरेटें पीते थे।लकड़ियों का इतना ऊँचा ढेर मै अपने जीवन मे पहली बार देख रहा था।वहॉ कई स्टॉल भी बने हुए थे।खाने पीने का हर सामान खरीदा जा सकता था।फायर ब्रिगेट की भी वहॉ चार गाड़ियॉ खड़ी थीं।हजारों की संख्या मे लोग आये हुए थे।वहॉ एक छोटा सा मेला लगा हुआ था।वेथसेवा भी वहॉ श्वैन्या के संग आई हुई थी।ढेर मे आग दी जा चुकी थी।देखते ही देखते आग की लपटें आसमान को छूने लगी थी।हर तरफ प्रकाश ही प्रकाश फैल चुका था।वेथसेवा पर पहली नजर मेरी ही पड़ी।वो अपनी मॉ के संग खड़ी न जाने किस बात पर खिलखिलाये जा रही थी।जब श्वैन्या ने हमे देखा तो वो वेथसेवा को लिए हमारे पास आई।ये मेरा इनसे पहला परिचय था।वेथसेवा ही बताने लगी कि वेर्टोल्डफेल्डे मे लोग मुझे वाल्डट्राउट का भारतीय मेहमान कहते हैं।पहली बार मै उसे इतने करीब से देख रहा था।लम्बी कद,तराशा बदन,घूंघराले लम्बे सुनहरे बाल,खनखनाती हॅसी,एक दूसरे पर चढे बगूले की तरह बग बग करते दॉत।इस बार भी मुझे ईश्वर का अन्याय समझ मे नही आया।वो अपनी पलके सिर्फ जरा सा ही खोल पाती थी।वहॉ पुतलियॉ नही थी।

रात के एक बजने को आए थे।हमे वापस भी लौटना था।वेथसेवा ने अपनी वाकिंग स्टिक फोल्ड की और उसे अपने बैग मे डाल लिया।बिना किसी झिझक के उसने ने अपना बॉया हॉथ मेरी तरफ बढा दिया।उसे थामते ही एक सुखद अनुभूति से मेरा बदन सिहर सा गया था।हम एक दूसरे से अपना कदम मिलाये बढे चले जा रहे थे।बातों मे हमे रास्ते का पता तक न चला।उसके प्रश्नो का तो जैसे कोई अन्त ही न था।मुझे एक पल के लिए भी ऐसा न लगा कि उसे अपने अन्धेपन से कोई परेशानी हो।जिस दुनिया के बारे मे मै उसे सुनाये जा रहा था,वो उसके लिए अन्जान तो था,पर उबाऊ नही।वो हर भावना के मूल को जानती थी और एक हद तक उसकी व्यापकता को भी।हेर्सवेर्ग के एक स्कूल से उसने आबिटूअर कर रखा था और ग्योटिंगन मे एक ट्रेनिंग का इन्तजार कर रही थी,जिसे करने के बाद उसे किसी अन्धों के स्कूल मे पढाने की नौकरी मिलनी थी।वो टीचर बनना चाहती थी।

गई रात मै बिस्तर पर पड़ा वेथसेवा के बारे मे सोचता रहा।न तो मै उससे ढंग से मिला था और न ही उसे ढंग से देखा था,पर मुझे उससे प्यार हो गया था।

रह रह कर मुझे ऐसा लगता था जैसे वेथसेवा मुझसे ये पूछ रही होःमुझसे मिलने मे इतनी देर क्यों कर दी!फिर मै उसे सम्बोधित करके उसे दसो कारण गिनवाने लग पड़ता था।मेरी ऑखें ऑसुओं से डबडबा जाती थी।मै अपने ईश्वर से उलझ पड़ता था।उन्हे अन्यायी कहके मै मौन रोने लग पड़ता था।

समानान्तर एक दूसरा सत्य भी तलवार की तरह मेरी ऑखों के सामने झूल रहा था कि क्या मै वेथसेवा को सदा के लिए अपना पाऊँगा!सहानुभूति की जिस अवस्था मे मै था,वहॉ आश्वासन ही आश्वासन थे,पर मै एक बात अच्छी तरह जानता था कि ऐसी अवस्थाओं की उम्र कोई विशेष लम्बी नही होती है।

दूसरे दिन जब मै नाश्ते के बाद घर से बाहर निकला,तो देखा कि वेथसेवा अपने बगान मे एप्रन पहने आलू खोदे जा रही है और वो भी बड़े सधे हॉथों से।एक बार तो मुझे अपने देखे पर विश्वास तक न हुआ।ऑखों पर गोगल्स,सर पर स्कार्फ पैरों मे लौंग बूट,उसे देख कर कोई भी ये नही कह सकता था कि वो जन्म से अन्धी है।मैने फाटक पर जाके उसे आवाज लगाई।अपना फावड़ा फेंक कर वो तत्काल भागी आईःअन्दर तो आओ।बाहर क्यों खड़े हो!

बड़े प्यार से वो मेरा हॉथ थामे मुझे अपने बरामदे तक ले गई।वहॉ बैठने के लिए एक झूला था।मुझे उस पर बिठा कर वो रसोई मे चली गई और एक तश्तरी मे शर्बत से भरी दो ग्लासें लिए आई।मुझे एक ग्लास पकड़ा कर वो मेरे बगल मे ही बैठ गई।दो चार औपचारिक बातों के बाद जब मैने उससे कहा कि वो एक बड़ी सी टोकरी ले कर बगान मे चले।मै उसकी मदद करना चाहता हूँ, तो उसने बड़ा विरोध किया।भाग कर अपना फावड़ा भी न जाने कहॉ छुपा आई!

ःतुम मेरे मेहमान हो।मै तुम्हारी कोई मदद नही ले सकती।

इस दिन के बाद मेरे पास जितना भी खाली समय होता था,वो वेथसेवा के संग ही गुजारता था।मै ज्यादेतर उसके संग बरामदे के झूले पर बैठता था या फिर मै उसके संग दूर दूर तक घूमने जाया करता था।मै उसके लिए मोन के लाल लाल फूल भी इकट्ठा किया करता था।ये फूल उसे बड़े कोमल लगते थे।उनकी आकृतियॉ तो मै उसे बता चुका था,पर रंगों का उसे कोई भान नही था।जिस तरह वो उन्हे फूलदान मे सजा कर देखा या फिर छुआ करती थी,मुझे बड़ा अनुप्राणित करता था।मुझे ये पता नही था कि जर्मनी मे अन्धों के लिए पूरे विश्व का साहित्य उपलब्ध है।मुझे ये भी पता नही था कि वेथसेवा की साहित्य मे इतनी रूचि है।एक दिन झूले पर बैठी वो अना कैरनिना के बारे मे सुनाने लगी।टाल्सटाय के इस

उपन्यास को मैने भी पढा था और इस उपन्यास पर बनी मैने फिल्म भी देख रखी थी। मै चुप चाप बैठा उसे सुने जा रहा था। जब अन्त मे उसने अना को एक आती ट्रेन के सामने लाईनों पर कूदते पाया, तब उसकी आवाज बिल्कुल रूँध चली थी। उसके अनुसार टाल्सटाय को अना के साथ ऐसा नही करना था। मेरे दाहिने कन्धे पर वो अपना सर रखे रोये चली जा रही थी। वेथसेवा की ऑखों से ऑसू नही, सिर्फ सफेद मोती झरते थे।
मै उन दिनो अठ्ठाईस वर्ष का था। एक हद तक परिपक्व भी था। मै जर्मनी मे रह रहा था, फिर भी मै वेथसेवा के समीप जाने से डरता था। मै उसे छूने से भी डरता था। मेरी आत्मा ने मुझे डरा रखा था। वेथसेवा के पास मुझे देने को सब कुछ था, पर मेरे पास उतनी हिम्मत नही थी कि मै उसे विधिवत अपनी पत्नी बना कर स्वीकार कर पाता। उसे प्यार करना या उसे अपनाना यही मात्र दो बाते थीं। एक मेरे वश का था, दूसरा मेरे संशय का विषय था।
श्वैन्या और वाल्डट्राउट दोनो ने ही मेरे इस सम्बन्ध को बेहद सहज लिया। वेथसेवा के पास एक काले रंग का शिकारी कुत्ता था। वो एक साये की तरह उसके आगे पीछे चलता था। वो उसका गाईड भी था। उसका नाम लीड था। वो वेथसेवा के हर इशारे को समझता था। वो उससे बातें भी करती थी। अपनी गर्दन तिरछी किये वो वेथसेवा के एक एक शब्द सुनता था। जब मै पहली बार वेथसेवा से मिला था और वो भूँकता फाटक तक आया था, तब वेथसेवा ने उसे डॉटा नही था। उसे अपने पास बुला कर बस इतना ही कहा था कि मै उसका एक अच्छा दोस्त हूँ और उसे मेरे साथ ऐसा वर्त्ताव नही करना चाहिये था। माफी के नाम पर तत्काल वो मेरे जूते चाटने लग पड़ा।
वेथसेवा का कमरा पहली मंजिल पर था। उसकी खिड़की वाल्डट्राउट के ड्राईन्गरूम से बड़ी साफ नज़र आती थी। मै उसे ज्यादेतर अपने विस्तर पर लेटे कोई किताव ही पढते देखता था। अक्सर वो अपनी खिड़की पर भी आके खड़ी हो जाती थी। मै उससे मिलने रोजाना तीन दफे जाता था। शाम का खाना भी कभीं कभार मै उसी के संग खा लिया करता था। श्वैन्या को घर वापस आते आते रोज ही रात के बारह एक बज जाते थे।
वेथसेवा की कोई अन्तरंग सहेली नही थी और न ही कोई अन्तरंग दोस्त। किताबें ही उसका एकमात्र संसार था। श्वैन्या के बाद उसके सामने सिर्फ एक रास्ता शेष बचा थाःअन्धों का हॉस्टल और फिर उसकी अपनी अन्धेरी दुनिया। एक समान्य जीवन मे उसे लाने से सभी मेरी तरह ही डरते थे।
वेथसेवा मेरे मन मे समाये चली जा रही थी। उसका कहा एक एक शब्द मेरे मन को छू जाता था। बस अपनी इस उम्र मे उसे अपनाने की हिम्मत मेरे पास नही थी। अपने इन ग्यारह दिनो मे मैने जितना अपने आप को कोसा, शायद ही उतना किसी और को। रह रह कर कई वर्षो पहले एक व्यक्ति से एक ट्रेन मे हुई मुलाक़ात मेरे ऑखों के सामने जीवन्त हो उठता था। मै वाम्बे मेल से धनवाद जा रहा था। मेरे पास थ्री टायर का रिजर्वेशन था। गया तक मै सोया ही रहा, पर इस जंक्शन पर ऐसी रेल पेल मची कि मुझे जगना पड़ गया। जब मै नीचे उतर कर अपनी सीट पर आया, तो देखा कि ठीक मेरे सामने एक नव विवाहिता घूँघट काढे बैठी अपनी डोलची मे कुछ ढूँढे जा रही है। तभी उसका पति लोगों को धकियाता अपनी सीट तक आया। उसके हॉथों मे तिलकूटों से भरा एक ठोंगा था। एक समान्य नाक नक्श का एक सधारण सा व्यक्ति। तव तक उसकी पत्नि अपनी डोलची से एक तेल से सनी पोटली निकाल चुकी थी। जब उसने एक पराठे पर कुछ आलू रख कर अपने पति की तरफ बढाया, तो वो उसे मेरी तरफ बढाते हुए बड़े प्यार से कहाःआप भी हमारे संग नाश्ता कर लें। मिसेस ने बनाये हैं। मै उसे ना नही कह सका। बात चीत के सिलसिलों मे मुझे पता चला कि वो बनारस के शिवपुर इलाके मे एक प्राइमरी स्कूल मे शिक्षक है और पहली बार अपनी पत्नी के संग अपने मॉ बाप से मिलने जा रहा है। जिस स्कूल मे वो पढाता था, उस स्कूल के हेड मास्टर उसके ससूर थे। इशारे से ही वो मुझे ये भी बता चुका था कि उसकी पत्नी जन्म से अंधी है।
बाद के दिनों मे मेरे जीवन मे अक्सर उसका जिक्र आया। मेरे किसी भी मित्र ने इस बात को नही माना कि वो अपनी पत्नी को इस वजह से स्वीकारा कि वो उससे प्यार करता था और उसके पास एक सक्षम व्यक्तित्व और चरित्र था। सभी ने उसके ससूर की तरफ अपनी उँगलियॉ उठाईःअपनी नौकरी वचाने के लिए अगला उनका दामाद बन गया होगा। मै इसे कभीं नही माना। उस व्यक्ति के पास एक चरित्र था, जिसका एक अल्पांश भी मेरे या मेरे इर्द गिर्द के लोगों के पास न था और न है। हमे जो शिक्षायें मिली थी, वो गलत तो नही थी, परन्तु उन भूमियों पर इस तरह के चरित्र का पनपना सम्भव नही था।
अपनी तरफ से मै सदैव सजग रहा। जिसे कुछ देना ही नही, उसका कुछ लेना ही क्यों!न तो मैने वेथसेवा का सानिध्य चाहा और न ही उसे कोई आश्वासन ही दिया, पर उसने मेरे प्यार को भॉप लिया था। मै उसे अपना नही सकता, मेरी ये मजबूरी उसके समझ के बाहर की थी।
ये वेर्टोल्डफेल्डे मे मेरा आखिरी दिन था। ग्यारह बजे लाऊटरवेर्ग से मुझे बर्लिन की वस लेनी थी। सुवह के नाश्ते पर ही आन्द्रियास आ धमका था। वो मुझे लाऊटरवेर्ग तक पहुँचाने आया था। पिछली शाम को वेथसेवा ने मेरा सब कुछ गडमड कर दिया था। किसी ने सही ही कहा है कि अपंगों का आक्रोश कभीं भी और किसी भी बात पर भड़क सकता है। इन्हे ऑका नही जा सकता। दरअसल मुझे वेथसेवा के कमरे मे जाना ही नही था। ये एक स्निग्ध शाम थी, जिसका अन्त बेहद उपहासजनक था। वेथसेवा के दिमाग पर एक जनून छा गया था। देखते ही देखते वो इतनी विकराल बन गई कि मै आवाक रह गया था। एक दिव्य लड़की एक सतही लड़की बन गई थी। वो चिखने चिल्लाने भी लगी थी। कई घरों के लोग अपने बरामदों मे आ जमे थे। मेरे वारे मे जो सोचा जा रहा था, उसकी कल्पनामात्र से आज तक मेरे रोंगटें खड़े हो जाते हैं। यहॉ तक कि वाल्डट्राउट ने भी मुझे दोषी पाया। मै चुप ही रहा। अपना वचाव करता, तो वेथसेवा पर लांक्षन ही लगाता। मुझे दुख इस बात का था कि निर्दोष होते हुए भी मैने जर्मनी मे विदेशियों की छवि गन्दी की, जो पहले से ही गन्दी थी। जब मै वाल्डट्राउट से औपचारिक विदा लेकर आन्द्रियास की गाड़ी तक आया, तो वेर्टोल्डफेल्डे के लोग मुझे इस तरह घूर रहे थे, जैसे मै किसी का खून करके भाग रहा होंऊॅ। वेथसेवा अपनी खिड़की पर खड़ी मेरी तरफ ही देखे जा रही थी। आन्द्रियास भी चूप्पी साधे बैठा था। श्वैन्या ने भी मुझे देख कर अपना मुँह फेर लिया। मैने इनके विश्वासों का हनन जो कर दिया था।
वर्लिन मे सहज होने मे मुझे कई महीने लगे। वेर्टोल्डफेल्डे दुवारा न जाने की मैने कसम ही खा ली, पर ये शाम मै आज तक नही भूला। ये एक दुःस्वप्न बन गया। मुझे आये दिन रातों मे डराता है। वेथसेवा को मै भूला तो नही था, पर अव मै उससे प्यार भी नही करता था।
सिहरन थोड़ी बढ चली थी। मै टुर्म से नीचे उतरा और एक पगडन्डी लेकर आहिस्ते आहिस्तें लाऊटरवेर्ग की तरफ वढ चला। मै अपने अपार्टमेन्ट मे आया ही था कि अचानक मेरे ऑखों के सामने एक धूप्प सा अन्धेरा छा गया। पास ही एक कपड़े की आलमारी थी। उसी को लपक कर थामना

चाहा. पर उसके पहले ही फर्श पर गिर कर ढेर हो गया। अप्रत्याशित ये हर्ट अटैक था। ये पिछले वर्ष दस अक्टूबर की बात है। जब मुझे होश आया. तब मै ग्योटिंगन यूनि क्लिनिक के एक इन्टेनसिव वार्ड मे था। मुझे तीन इन्स्टैन्टस दिये जा चुके थे। इस इन्टेसिव वार्ड मे मुझे दस दिन रहना पड़ा. फिर मै एक नार्मल वार्ड मे आ गया। वहाँ पहले से एक और पेशेन्ट था. पर उसी दिन उसे रिलिज किया जाना था। तमाम संयजों से संलग्न होने के बावजूद अब मै हिल डूल सकता था। सुबह का नाश्ता हमने साथ साथ किया। उसका नाम ओलीवर था। हमारे बीच हल्का फूल्का परिचय भी हो गया था। जब बारह बजे उसकी पत्नी उसे लिवाने आई. तब उसे देखते ही मेरी रीढ की हडी जमने को आई। मुझे लगा. जैसे वो बेथसेवा हो। भय से मैने करवट बदल कर अपनी दोनो आँखें ही मूँद लीं। चलने से पहले जब ओलीवर मुझे जगाने आया. तब मै सिहर कर रह गया। बड़े प्यार से उसने मेरा पीठ सहलाया और अपनी पत्नी से मेरा परिचय करवा कर कहाः अपना ख्याल रखना। मै अपनी सारी पत्रिकायें तुम्हारे लिए छोड़े जा रहा हूँ। साथ मे टेलीविजन और टेलीफोन के कार्डस भी थे। जब उसकी पत्नी रोजवीता ने अपना हॅाथ मेरी तरफ बढाया. तब एक बार फिर से मैने उसे ध्यान से देखा। वो बेथसेवा नही थी. पर बेथसेवा से उसकी साम्यता मुझसे ये कह रही थी कि वो उसकी बहन थी। मैने उससे कोई ज्यादे पूछताछ न की। उसकी तरफ सिर्फ अपना हॅाथ अपना नाम बताते हुए बढा दिया। मेरा नाम सुनते ही उसकी दोनो भवें एक दूसरे से जा टकराईं।

इस नार्मल वार्ड मे एक सप्ताह के बाद मुझसे जोड़े एक के अलावे सारे संयत्र हटा दिये गये थे। अब मै अकेले टवायलेट तक जा सकता था. पर वार्ड छोड़ने की मुझे कोई अनुमति नही थी। एक दिन सुबह जब मै टवायलेट से बाहर आया. तो देखा कि मेरे कमरे मे खिड़की से लगी कोई औरत खड़ी है और बाहर की तरफ देखे जा रही है। उसे हल्के से हलो कहके मै अपने विस्तर तक आया ही था कि वो पलटी। मुझे ऐसा लगा कि मुझे दुबारा हर्ट अटैक होने वाला है। बेड की रेलिन्ग का सहारा लेकर मै धम्म से अपने विस्तर पर जा बैठा। वो मेरे पास नही आई. पूर्ववत खिड़की पर ही खड़ी रही। अचानक मेरी साँसे भारी हो चली थीं। मै पसीने मे नहा चला था।

पता नही मेरे वार्ड की नर्सो ने फ्लोर या फिर सिस्टर्सरूम मे रखे मानिटोरों मे क्या देखा!पलक झपकते ब्रिगेटे नामकी एक नर्स भागती हुई मेरे कमरे मे आई। वो इस वार्ड की सबसे सख्त नर्स थी। मेरा उससे एकाध बार पहले भी झगड़ा हो चुका था। वो आते ही बेथसेवा से अपनी कर्कश आवाज मे जा उलझीः तुम किसके परमिशन से इस कमरे मे हो!तुम्हे पता है कि इसे कितने इन्स्टैन्टस दिये गये हैं!सिर्फ दो मिनटों की बात थी। वरना ये हमारे बीच नही होता।

ः मुझे ये सब तो पता नही है। मुझे सिर्फ ये पता है कि वो बीमार है। मै तो सिर्फ उससे मिलने आई थी।

ः कौन हो तुम!उसकी रिश्तेदार हो!जल्द से जल्द इस वार्ड को छोड़ दो. वरना मै एडमिनिस्ट्रेशन को फोन करने जा रही हूँ।

तब तक मेरे वार्ड का डाक्टर भी मेरे पास आ चुका था। मैने कनखियों से देखाः बेथसेवा आँसुओं मे नहाये खड़ी थी। मै अपने सारे अपमान भूल चुका था। तत्काल उठा और ब्रिगेटे के सामने जा कर खड़ा हो गया और उससे लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहाः स्वेस्टर ब्रिगेटे! ये मेरी मेहमान है। इतनी दूर से मुझसे मिलने आई है। तुम मेरे मेहमानो से इस तरह से बातें नही कर सकती हो।

बेथसेवा को थामे मै अपने विस्तर तक आया। समीप रखे एक कुर्सी पर उसे विठा कर पूछाः

तुम्हे रोजवीता से पता चला कि मै यहाँ हूँ!

वो चुप बैठी सिर्फ रोती रही। मै भी उससे क्या पूछता!मेरी न तो उसमे कोई रूचि रह गई थी और न वेर्टोल्डफेल्डे मे ही। मेरी समझ मे ये भी नही आ रहा था कि वो आखिर मुझसे मिलने क्यों आई है!मेरे कमरे मे वो लगभग घन्टे भर रही. पर उसने एक शब्द भी नही कहा। जैसे आई थी. वैसे ही वापस चली गई।

बीस वर्ष देखते ही देखते गुजर गये थे। मेरे पास अपनों के नाम पर बस कुछ दोस्त थे और कुछ सहेलियाँ थी। ग्योटिंगन मे मै किसी को भी नही जानता था। इस शहर मे मै पहली बार आया था। हार्ल्स तो मै तकरीबन हर वर्ष ही जाता था. पर छोटे छोटे कस्बों मे और ज्यादेतर किसान परिवारों मे ही रहता था। दूसरे पेशेन्टों से मिलने उनके परिवार आते थे. रिश्तेदार आते थे. पर मेरे पास ऐसा कुछ नही था। बेथसेवा से मिल कर मुझे कोई खुशी नही हुई। मै अब उसे माफ नही कर सकता था। अगर उसमे जरा सा भी चरित्र होता. तो वो कम से कम अपनी माँ या फिर वाल्डट्राउट को तो सच्चाई बताई होती। उसकी वजह से मैने आन्द्रियास जैसे दोस्त तक को खो दिया। अचानक मेरा मन कसैला हो गया। एक बार तो मन किया कि जाकर स्वेस्टररूाऊम मे उनसे ये कह दूँ कि मै कोई विजिट नही चाहता।

जाने से पहले बेथसेवा बस इतना ही पूछी थीः

ः कल भी तुमसे मिलने आऊँ!

ः तुम्हारी मर्जी। ये भी मैने उसे बेमन ही कहा।

जब वो मुझसे गले मिलने को झुकी. तो मै अर्न्ततम तक कॉप गया था। मुझे उसे मना करना पड़ा। न चाहते हुए भी मेरी आवाज सख्त हो गईः इतना अपनापन दिखाने की तुम्हे कोई जरूरत नही है। पिछले बीस वर्षो से मै तुम्हारे दिखाये अपनापन का भार उठाये जा रहा हूँ। गलती तुम्हारी थी और सजायें मुझे भुगतनी पड़ी। कितने लोगों के विश्वास मेरे प्रति तुम्हारी वजह से मरे!गालों पर कालिख मलने को मै ही तुम्हे मिला था!विना एक दूसरे के संग सोये तुम्हारे देश मे सम्बन्ध शुरू ही नही होते!ये कहके मैने अपना चेहरा फेर लिया।

दूसरे दिन सुबह नाश्ते के बाद मुझे इस क्लिनिक के एक सोशल वार्ड मे जाना था। सुबह ही सुबह एक नर्स आकर मेरी दाढी वगैरह बना कर मुझे साफ सूफ कर गई थी। मै उसकी दी नई छींटदार अस्पताली फ्रॅाक पहने अपने विस्तर पर बैठा था। मेरे पास न तो जूरावें थी और न ही पहनने को अन्डरवीयर। मेरे सारे सामान लाऊटरवेर्ग मे रह गये थे। हॅास्पीटल अथोरिटी के पास समय ही नही होता था। ठीक नौ बजे एक कम उम्र का सिवी एक रौल चेयर लिए मेरे कमरे मे आया और मुझे चेयर पर विठा कर मेरी रजाई से मुझे तोप ताप कर सोशल स्टेशन की ओर बढ चला। जब मैने वहाँ बेथसेवा को देखा. तो मेरे विस्मय की कोई सीमा ही नही थी। इस कमरे मे उसके पास बैठने को एक शानदार मेज थी. एक शानदार कुर्सी थी. ढंग का टेलीफोन था और एक असिस्टेन्ट भी था। मेरा रौल चेयर ठीक बेथसेवा के बगल मे लगा कर ये सिवी उसे अपना पेजर नम्बर लिखवा कर चला गया। लपकते बेथसेवा की असिस्टेन्ट विना पूछे मुझे एक कप कॉफी पकड़ा गई। बेथसेवा को मेरे केस की फाईल अपने अक्षरों मे मिल चुकी थी। वो उन्ही मे जा उलझी थी। कुछ देर के बाद वो मुझसे पूछीः तुम्हे प्रमोद कहके पुकारूँ या तुम्हारे फैमिली नेम से!

मै चुप ही रहा।

ःमुझे तुम्हारे लिए एक रिहैविलेशन सेन्टर का प्रबन्ध करना है।जर्मनी के किस अंचल मे रहना चाहोगे!
ःमै अब बर्लिन वापस जाना चाहता हूँ।
ःरूडोर्सडोर्फ का नाम सुना है!हैं तो ये ब्रान्डेनवुर्ग मे.पर बर्लिन से सिर्फ एक घन्टे का रास्ता है।काफी खुली जगह है।पोल्यूटेड भी नही है।वहाँ जाना चाहोगे!
ःजैसा तुम ठीक समझो।
ःवहाँ कब जाना चाहते हो!
ःजल्द से जल्द।पर मेरे सारे सामान लाऊटरवेर्ग मे है।मेरे पास पहनने को कुछ भी नही है।
ःलाऊटरवेर्ग मे ठहरे कहाँ थे!
ःएक वान्डर हॉस्टल मे।
ःकमरे की चावी साथ मे है तो दे दो।आज ही मँगवा देती हूँ।
ःचावी वगैरह तो मेरे पास नही है।सब कुछ ऐसे ही छोड़ कर ग्योटिंगन आना पड़ गया था।
ःठीक है।ये सब कुछ तुम मेरे जिम्मे छोड़ दो।तुम चल कर आराम करो.कहके उसने सिवी का पेजर डायल कियाःमै सिल्डवाख बोल रही हूँ।तुम अपने पेशेन्ट को वापस उसके वार्ड मे ले जा सकते हो।
मेरे बगल मे एक अन्धी सरकारी ऑफिसर बैठी थी।कितना वजन था उसकी आवाज मे!
दो घन्टे के अन्दर मेरा सूटकेस मेरे वार्ड मे था।
वेथसेवा मुझसे मिलने तकरीबन तीन बजे आई।मै अपने विस्तर पर लेटा एक पत्रिका पढ रहा था।वो चुपचाप मेरे वेड की रेलिन्ग पकड़ कर खड़ी हो गई।
लेटे ही लेटे मैने उसके लिए एक कुर्सी खींच दी।डान्के श्योन कहके वो उस पर जा बैठी।बड़े ही ध्यानपूर्वक मैने उसे देखा।पिछले वर्षो मे वेथसेवा मे ऐसा कोई खास परिवर्त्तन नही आया था।लम्बी फ्रॉकें वो उन दिनो भी पहनती थी।उसी कपड़े का एक लम्वा सा दुपट्टा वो उन दिनो भी वॉधती थी।थोड़ी वहुत झुर्रियॉ उसके चेहरे पर आ तो गई थी.पर वो उतनी ही आकर्षक थी.जितनी हुआ करती थी।तेज हवा या फिर धूप से प्रोटेक्शन के ख्याल से वो एक गोलाकार फोटोक्रानिक स्पेक्ट पहनने लगी थी.जो उस पर वाकई बड़ा फब रहा था।
मै अपलक वेथसेवा को देखे जा रहा था।अचानक उसके ओंठ थरथराने लगेःपरसों तुम्हे रिलिज कर दिया जायेगा।तुम एक कार्डियोलॉजिस्ट की सुरक्षा मे रूडोर्सडोर्फ चले जाओगे।न जाने फिर तुमसे कब मिलना होगा!तुम्हे वेथसेवा की याद कभीं नही आती!तुम उसे माफ नही कर सकते!इतने जिद्दी हो तुम!वेर्टोल्डफेल्डे मे सभी को पता है कि उस शाम सारा का सारा दोष मेरा ही था।
मुझसे कुछ भी नही कहा गया।
ःमॉ भी नही रहीं।वेर्टोल्डफेल्डे मे एक टूटे खलिहान के अलावे हमारे पास कुछ भी न रहा।रोजवीता भी अपने ससुराल की हो कर रह गई।ट्रेनिन्ग के दौरान एक अन्तरंग दोस्त वना था।मेरी तरह वो भी जन्म से अन्धा था।तीन वर्षो तक मेरा उससे सम्वन्ध रहा।फिर ये भी टूट गया।हमारी एक समवेत वेटी है मारिया।तेरह वर्ष की है।सातवीं क्लास मे पढती है।वो अपने माता पिता की तरह अन्धी नही है।उसे मैने तुम्हारे वारे मे सब कुछ वता रखा है।वो तुमसे मिलना चाहती है।
यकायक मै मौन रोने लग पड़ा।
मै फ्लोर पर बैठा ड्राइवर का इन्तजार कर रहा था।साढे दस वजने को आये थे.पर वेथसेवा का दूर दराज तक कोई पता नही था।उसने मुझसे आठ वजे सुवह आने का वायदा किया था।एक दिन पहले मै हर्ट सेन्टर से उसके लिए दो सफेद टीशर्टस भेंट स्वरूप खरीद लाया था और मारिया के लिए ढेर सारे चाक्लेटस।उन्हे एक अखवार मे रैप करके मै वेथसेवा और मारिया के आने का इन्तजार कर रहा था।जब भी लिफ्ट थर्ड फ्लोर पर आके रूकती थी.अनायास मेरी नजरें उस दिशा मे उठ जाती थी।मै अपने आप को उसके प्रति अपने रूखे व्यवहारों के लिए भी कोसे जा रहा था।वेथसेवा नही आई।ठीक ग्यारह वजे हॉस्पीटल का ड्राइवर आया।आनन फानन मै अपने वार्ड के नर्सो और डाक्टरों से विदा लिया फिर एक नर्स को अपने खरीदे टीशर्टस और चाक्लेटस पकड़ाये और ड्राइवर के संग लिफ्ट की ओर वढ चला।मेरा मन विल्कुल उचाट हो चला था।हमारी गाड़ी परिशिर से वाहर निकल कर मेन सड़क पर आई ही थी कि मुझे ऐसा लगा कि तीसरे फ्लोर के गेस्टरूम की खिड़की पर खड़ी वेथसेवा अपनी वेटी के संग अपने हॅाथ लहराये जा रही हो।अव फिर से मेरे लिए अपने वार्ड मे लौटना सम्भव नही था।
न जाने किस वजह से वो मुझसे विदा लेने नही आई!
रूडोर्सडोर्फ रेहा के चारमंजिली इमारत के कुछ कमरों की वत्तियॉ अभी भी उँघ रही थी.पर वाहर परिशर मे पर्याप्त उजाला था।मै काल्क जे के तटों तक जाने वाली तंग पगडंडियों पर अनायास वढा चला जा रहा था।आसपास के ओकों और वर्चो के पत्ते गहरे सूनहरे हो चले थे।उन्हे गिरने के लिए प्रकृति के वस किसी एक इशारे का इन्तजार था।
मै काल्क जे के एक तट पर आया।वहॉ एक संकरा सा पूल बना हुआ था.जो तकरीवन पानी मे पॉच सौ मीटर जाने के वाद अचानक चौड़ा हो कर एक प्लेटफार्म सा वन जाता था।वहॉ बैठने के लिए एक वेंच वनी हुई थी।मै हर शाम वहॉ जाया करता था।काल्क जे का विस्तार.इस तट की स्निग्घता.के अलावे आसमान के पश्चिमी ऑगन मे उभरा इन्द्रधनुष मुझे हर शाम ही यहॉ आने को वाध्य कर देता था।इस इन्द्रधनुष की छवि काल्क जे मे भी वनी रहती थी।वासी पावरोटी पाने के लालच मे आसपास के हंस और वत्तख सैकड़ों की संख्या मे मेरी तरफ लपकते थे.पर उन्हे देने को मेरे पास कुछ नही होता था।वो निराश देखते ही देखते मेरी नजरों से ओझल हो जाते थे।
इन्द्रधनुष के सारे रंग यकायक गहरे हो चले थे।न जाने कव इनके पीछे लुढकता सूर्य का एक लाल गोला आया और शनै शनै नीचे की ओर सरकने लगा।इन्द्रधनुष के रंग एक दूसरे मे गडमड होने लगे।स्नात सारा आसमान स्याह हो चला।मुझे वेथसेवा की यादों ने हर दिशाओं से घेरना शुरू कर दिया।